

बुद्बुद

ज्ञान-खानि का रत्न नहीं हूँ, और न काव्यकला गुम्बद ।

मैं तो कोरा चार सिन्धु के जल का हलका-सा बुद्बुद ॥

×

×

×

हीं जो व्यथा-कथा की जग के उर में लिख-जाऊँ ।

०२ त हूँ नहीं स्वर्ग-सुन्दरियों में आदर पाऊँ ॥

५ खारे जल का बुद्बुद पीता आता जाता हूँ ।

जली जग में आकर वणभर सुने में लय पाता हूँ ॥

हरिभाऊ उपाध्याय